International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

इतिहास में कांस्य कला के विकास का एक विश्लेषण

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

निशा

छात्रा, *MA*, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

विश्व का इतिहास धातुओं के विकास से प्रभावित रहा है। धातु के पहले मनुष्य ने अपनी सृजनात्मकता का परिचय पत्थरों को तकनीकि आकार प्रदान करके दिया है। आज से लगभग पच्चीस लाख साल पहले मनुष्यता ने जिस पहले यंत्र को जन्म दिया वह पत्थर से निर्मित था। इस पत्थर के ऊपर ही इसे नाम दिया गया पाषाण काल। पाषाण काल इतना बड़ा काल था की बाद में जॉन लुबाक ने इसे तीन भागों में विभाजित कर दिया। यह विभाजन मानव के विकास के तीन अलग भागों को दर्शाता है। पत्थरों के बाद धातुओं का आविष्कार होता है और पाषाण काल का नाम ताम्र-पाषाण काल हो जाता है। पहली धातु ताम्बा थी और दूसरी धातु कांसा बनी। इसका आविष्कार ताम्बे में टिन मिला कर किया गया। इस शोध पत्र में मेरा प्रयास है इतिहास में कांसे के विकास को वैश्विक स्तर पर विश्लेषित करना। कांसे का विकास अनिवार्यतः मानवता में तकनीकी का विकास है।

मुख्य शब्द – सुमेर, कांस्य युग, कांसा, ताम्र-पाषाण काल

भूमिका

कांसा का विकास मानवता के इतिहास में एक युग प्रवर्तक घटना थी । क्यों कि धातु विज्ञान का विकास का पहला प्रयास यही था। कांसे के विकास ने मानव प्रयोगों को अनिवार्य दिशा प्रदान किया । भारत में कांसे के विकास का इतिहास वस्तुतः ताम्र युग के पश्चात होता है और इसका उत्कर्ष हम प्रागैतिहास में पहली बार मोहनजोदड़ो में देखते हैं. भारतीय उपमहाद्वीप में मोहनजोदड़ो में कांसे के मुर्तिविज्ञान के विकास का शिखर प्रदर्शित होता है । भारत के अतिरिक्त समूचे विश्व में कांस्य कला के विकास के अनेक प्रतिमान उपलब्ध हैं जिका विश्लेषण व अध्ययन हम इस शोध-पत्र में करेंगे.

वैश्विक परिदृश्य

काँसे की वस्तुएँ सुमेर, मिस्र, ईरान, भारत, चीन के प्रागैतिहासिक युग के सभी स्थानों से प्राप्त हुई हैं परंतु इन सभी स्थानों के उस प्राचीन युग के काँसे की विधि, धातुओ के अनुपात आदि में अंतर है। जैसे भारत में कांसे का एक उदाहरण लें तो यहाँ एक प्रकार के काँसे में ताँबा 93.5 भाग, जस्ता 2.14, निकेल 4.8 भाग तथा आरसेनिक मिला है एवं दूसरी भाँति के काँसे की कृति में टिन सुमेर व ईरान की भाँति प्राप्त हुआ है। अमूमन कांसे की कला इसके निर्माण की सुविधा की दृष्टि से प्राप्त हुई है. इस मिली हुई धातु से कारीगर को वस्तुओं को ढालने में बड़ी सरलता हुई तथा इस मिश्रित धातु की बनी कुल्हाड़ी खालिस ताँबे की बनी कुल्हाड़ी से कहीं अधिक धारदार तथा मजबूत बनी।

कांस्य कला की निपुणता तथा इसकला के एक विशेष कालखंड में सार्वभौमिक प्रसार से ऐसा सहज ही अनुमान होता है कि इस धातु के कारीगरों का अपना एक घुमंतू समूह प्रागैतिहासिक युग में सक्रिय बन गया था जो एक स्थान से

दूसरे स्थान पर जाकर अपने धंधे तथा अपनी कला व तकनीकि का प्रचार किया करता था। पाषाण की बनी हुई कुल्हाड़ियाँ ही नहीं वरन ताम्बे की कुल्हाड़ियाँ भी इन काँसे की कुल्हड़ियों की विशेषताओं के समक्ष फीकी पड़ गयीं। इन्होंने कांस्य धातु से प्रागैतिहासिक पशु आकृतियाँ भी बनाई। इन्हीं कारीगारों ने कुल्हाड़ी के निर्माण में पारंगत होकर आगे इस कला का महीन विकास किया और चमकते हुए आभूषण भी बनाने प्रारंभ किए जिनके सबसे उत्कृष्ट युग के नमूने हमें जूड़े के काँटो के रूप में हड़प्पा, मोहनजोदेड़ो, खुरेब, हिसार, सूसा, छागर, लुरिस्तान, ऊर इत्यादि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार काँसे के बने बड़े से छोटे अनेक प्रकार के शाहकार हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, चान्हूदेड़ो, हिसार, सूसा, सियाल्क, चीन, कीश, ऊर तथा मिस्र से मिले हैं। आभूषणों के अतिरिक्त अँगूठियाँ भी इस धातु की बहुत सुंदर बनी हुई मिली हैं। लूरिस्तान में पाए गये कांसे की निर्मित एक अँगूठी के ऊपर तो बड़े ही सुंदर पशु तथा पशु अंकित हैं जिन्हें देखना अति मनोरम लगता है।

कांस्य कला के विकास का तकनीकि पक्ष

काँसे को जब कारीगर गलाकर ढालने लगे तो आवश्यकता के अनुरूप इन्होंने विविध कलात्मक आकृतियाँ भी बनानी प्रारंभ कीं। इन प्रमुख आकृतियों में जूड़े के काँटों के मस्तक पर बने प्रागैतिहासिक युग के पशुओं की आकृतियों दर्शनीय हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक तराजू पर एक बारहसिंघा और उसपर आक्रमण करता हुआ एक कुत्ता उकेरा गया है, खुरेब से प्राप्त एक आकृति के मस्तक पर ऊँट, हिसार से प्राप्त काँटे पर हंस, छागर बाजार से प्राप्त काँटे पर बंदर इत्यादि की बड़ी ही कलात्मक प्रतिमाएं या कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।

काँसे की इसके पश्चात् बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ भी बनने लगीं। इनमें सबसे मुख्य तो इस काल के सुमेर के अन्निपाद के गौ देवी के मंदिर के चबूतरे पर बने दो साँड़ तथा एक सिंह के मुख की चील है जो अपने पंजों में सिंह के दो-बच्चों को पकड़े हुए है। साँड़ों के शरीरों पर तिपतिया की उभाड़दार आकृतियाँ बनी हैं। मोहनजोदेड़ो से प्राप्त काँसे की एक ठोस स्त्रीमूर्ति भी दर्शनीय है जिसके सन्दर्भ में इतिहासकारों का मत है कि यह किसी कुलीन स्त्री की प्रतिमा है अन्यथा यह किसी गणिका की भी प्रतिमा है। हालाँकि अन्य विधियाँ भी प्रचलित थीं लेकिन इस काल में प्राय: मूर्तियाँ ढालकर बनाई जाती थीं।

प्रागैतिहासिक युग में काँसे के कारीगरों ने छोटी गाड़ियाँ भी बनाई जो खिलौनों की भाँति व्यवहार में आती थीं इनसे यह भी संकेत मिलता है कि आवागमन के लिए किस प्रकार के उन्नत साधन प्रागैतिहास में भी उपलब्ध थे। इस प्रकार की एक बड़ी सुंदर गाड़ी, जिसपर उसका चलानेवाला भी बैठा है, हमें हड़प्पा से प्राप्त हुई है।

काँसे पर नक्काशी तथा अनेक उभारदार की काम की हुई वस्तुएँ सबसे बढ़िया लूरिस्तान से प्राप्त हुई हैं जिसमें एक तरकश बहुत ही चित्ताकर्षक है.

कांस्य कला का ऐतिहासिक शोध

काँसे के बरतन भी इस काल में अति कलात्मक बने हैं। ऐसे बरतन ईरान, सुमेर, मिस्र तथा भारत के मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा लोथल से प्राप्त हुए हैं। ये भी प्राय: ढालकर या कांसे की पट्टी को पीटकर बनाये जाते थे। पीछे चलकर इन पर उभाड़दार काम भी दिखाई देने लगता है जो कदाचित् मिट्टी पर काम बनाकर उसपर पत्तर रखकर पीटकर बनता था।

कालांतर में इन मिश्रित धातुओ की विविध वस्तुएँ बनीं। भारत में भी तक्षशिला से कटोरी के आकार के मसीह पात्र प्राप्त हुए हैं। जिनपर ढक्कन लगा हुआ है तथा जिसमें कलम से स्याही लेने के हेतु छेद बना है। ऐसी धातु की बनी घंटियाँ भी यहाँ से प्राप्त हुई हैं। बहुत सी छोटी-छोटी चीजों में यहाँ धर्मचक्र के आकार की बनी पुरोहित के डंडे की मूठ, मुर्गे की मूर्ति तथा मनुष्य की मूर्तियाँ इत्यादि बहुत सी मिली हैं। यहाँ पर स्त्री की ठोस मूर्ति, जो कमल पर खड़ी

है, बड़ी ही सुंदर है। यह कला ईरान की कला से बहुत प्रभावित ज्ञात होती है क्योंकि ईरान में काँसे से बने बारहसिंघे प्राय: हखमनी काल के मिल चुके हैं तथा काँसे के बरतन भी उसी काल के प्राप्त हुए हैं।

काँसे का बना ई.पू. द्वितीय शताब्दी का एक चीता, जिसके पैर में पहिए लगे हैं, उज्जैन के पास नागदा से भी प्राप्त हुआ है। सिद्धार्थ की काँसे की बनी मूर्ति दक्षिण के नागार्जुन कोंडा से खुदाई में प्राप्त हुई हैं। यह प्राय: ईसा की प्रथम शताब्दी की है।

इंग्लिस्तान में सिक्के भी काँसे के बने जिसमें प्राय: 94 प्रतिशत ताँबा, 4 प्रतिशत टिन तथा 1 प्रतिशत जस्ता है। प्राचीन फ़ीनीशिया के लोगों ने भी काँसे पर बड़ा सुंदर काम किया। प्राचीन चीन में काँसे पर बड़ी सुंदर खुदाई का काम बना। यहाँ प्राय: अजगर के आकार की खुदाई के काम को मुख्यता दी गई। यहाँ के काँसे के दर्पण, घंटे तथा मूर्तियाँ उल्लेखनीय है। ईरान में कारीगरों ने काँसे पर खुदाई करके बड़े सुंदर बेल बूटे बनाए।

पीछे काँसे के बर्तनों पर ईरानियों ने चाँदी से पच्चीकारी करना भी प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार के जो सुंदर बरतन प्राय: ईसा की 13वीं और 14वीं शताब्दी के प्राप्त हुए हैं, वे दर्शनीय हैं। इनमें ईरान के स्त्री-पुरुषों को बगीचों में क्रीड़ा करते हुए दिखाया गया है। काँसे की जालीदार कटाव के काम की लालटेनें भी अरब में प्राय: ईसा की आठवीं शताब्दी की बनी हुई मिली हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कांसा

अन्य धातुओं के प्राप्त हो जाने पर भी आज काँसे का उपयोग मनुष्य के जीवन में कम नहीं हुआ है। इसके बनाने की विधि में कुछ अंतर करके वैज्ञानिकों ने विविध प्रकार के काँसे प्रस्तुत कर दिए हैं। आज मूर्ति बनाने के हेतु जो काँसा बनता है उसमें 85 प्रतिशत ताँबा, 11 प्रतिशत जस्ता तथा 4 प्रतिशत टिन रहता है। एक दूसरे प्रकार का काँसा, जो विद्युत् के तार बनाने के काम में आता है, उसमें 87 प्रतिशत ताँबा, 9 प्रतिशत टिन तथा 5 प्रतिशत फ़ासफ़ोरस रहता है। यह साधारण काँसे से कड़ा होता है।

निष्कर्ष

आज आभूषण बनाने के हेतु एक प्रकार के काँसे का व्यवहार किया जाता है जिसका रंग सुनहरा होता है। इस धातु को ऐल्युमिनियम तथा ताँबा विविध भाग में मिलाकर बनाया गया है। इसपर खुदाई का काम बड़ा सुंदर बनता है। जर्मनी में इस प्रकार का काँसा बहुत व्यवहार में आता है और वहाँ के बने इस काँसे के आभूषण आजकल यूरोप और अमरीका में बहुत पहिने जा रहे हैं।

इस प्रकार काँसा मनुष्य के उपयोग में सभ्यता के प्रारंभ से लेकर आज तक आता रहा है। भले ही इसका रंग बदल गया हो या इसकी दूसरी उपयोगिता हो गई हो, परंतु यह मनुष्य का निरंतर साथी रहा है और आगे भी कदाचित् बना रहेगा।

सन्दर्भ

1. पिगट, स्टुअर्ट : प्रीहिस्टारिक इंडिया
2. चाइल्ड, गॉर्डन ह्वाट हैपेंड इन हिस्ट्री?
3. पोप, आर्थर उफ़म : मास्टर्पीसेज़ ऑव पर्शियन आर्ट
4. मार्शल, सर जान : दि इंडस वैली सिविलाइज़ेशन